धर्म जीवन

जुलाई 2005

- ✡ मेरे रखवाले व मेरे माली
  - ✡ श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी
    - ✡ श्रीमान मनोहर लाल जी
      - ✡ श्रद्धेय कनल जी
      - ✡ Pearls Sublime.....
  - ✡ Sewaks! Beware of Great Illusion
- ✡ शुभ संग्राम

मेरे रखवाले व मेरे माली

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण को प्राप्त करना नेचर की अपनी रक्षा व विकास का अटल नियम पूरा करना है। इसलिए यह मनुष्य जीवन का सबसे महान सौभाग्य है। ऐसे गुरु की शरण उच्च बरकतों की वर्षा ही है।

देवात्मा के साक्षात दर्शनों का अवसर तो हमेशा के लिए लोप हो गया। उनके साक्षात बनाए उच्च व महान इंसान भी एक एक करके लोप हो गए। उनका सम्पर्क किसी अंश देवधर्म के प्रकृत मूल्यों व कदरों की सच्ची पहचान प्रदान करता है व अधिकारी जनों का परमहित करता था।

मेरा परम सौभाग्य कि भगवान देवात्मा के साक्षात सम्पर्क में रहे तीन महान इंसानों के साथ साक्षात सम्पर्क प्राप्त हो गया। उनके जीवनों की खुशबू ने मेरा अत्यंत हित किया है। मैं यह महसूस करता हूं कि नेचर ने भगवान देवात्मा की शरण के उपरांत श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी की शरण प्राप्त करवाके, मुझसे कोई उच्च बरकतें छुपा कर नहीं रखी।

मनुष्य के उपकारियों की लड़ी में गुरु के बाद उच्च वर्ग सम्बन्धियों का रुतबा है। उनकी शरण व संगत अधिकारी जनों के लिए जीवन सफल करने की योग्यता रखती है।

मैंने अपने उपकारियों के सम्बंध में एक लेख माला आरम्भ की, 15 के करीब लेख लिखे गए हैं जो हित स्रोत में कई वर्षो से छपते आ रहे हैं। अब सेवक यज्ञ के दिनों में हित स्रोत व धर्म जीवन के जुलाई अंकों के लिए हम उस लेखमाला में से कुछ महान हस्तियों के सम्बंध में लेख छाप रहे हैं।

जिन्होंने भले ही मेरा साक्षात उपकार नहीं किया परन्तु उनके उच्च व मुबारक जीवन ने मुझे सदा ही देवधर्म के उच्च मूल्यों व बरकतों के प्रति जगाने का काम करके मेरे पर अति उपकार किए हैं। हम आशा करते हैं कि अधिकारी जनों के लिए इन लेखों का पाठ जरूर हितकर सिद्ध होगा।

हित स्रोत में भी उन उपकारियों का वर्णन है जिन्होंने मुझे आध्यात्मिक जगत में बच्चों की तरह पाला है व अपनी विशेष कृपा मुझ पर की है। मैं महसूस करता हूं कि अगर आप की विशेष कृपा मुझ पर न होती तो समाज में आकर भी मैं क्या होता व कहां होता। आप मेरे जीवन के रक्षक व मेरे जीवन के माली थे। अपने इन हितैषियों की याद ही मुझे किसी और ही लोक में पहुंचा देती है।

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 4
जुलाई 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी

लगभग 100-125 वर्ष पहले शिमला वा उसके ऊपर के पहाड़ी स्थानों के लिए कोई सड़क या रेल आदि नहीं थी। पहाड़ी पगडंडियों के इलावा आवागमन का कोई मार्ग उपलब्ध नहीं था। विज्ञान की सहायता से अति कठिन मार्गों के लिए सड़कें बनाने के लिए बारूद-विस्फोट का ढंग निकाल लिया। फिर क्या था सैंकड़ों इंसान पहाड़ी मुकामों के लिए सड़क बनाने में जुट गए। इसके लिए चट्टानों को बारूदी सुरंगों की सहायता से उड़ाना पड़ा। यह काम बहुत ही बड़े खतरे का था। इसमें सैंकड़ों जानें समाप्त हो गईं। परन्तु 15-20 फुट चौड़ी सड़क बनाकर तैयार हो गई। जहां पैदल जाना ही महा कठिन था, वहां घोड़ा, बग्गीएं और अन्य मोटर कार आदि वाहन चलने लगे। आम मनुष्य की ज़िन्दगी सुविधाजनक बन गई। आख़िर हिंद के वायसराय साहिब के लिए शिमले में एक निवास स्थान बन गया। आज शिमला एक बड़े प्रान्त की राजधानी है। सैंकड़ों लोगों ने जानें वार दीं। परन्तु आम मनुष्य को आराम का सफर प्रदान किया। उन सड़कों के बनाने वालों का मनुष्य मात्र पर कितना बड़ा उपकार है।

देवात्मा जो विकास क्रम की अद्वितीय देन हैं, उनकी श्रेणी, उनका रुतबा, मनुष्य जाति में अध्यात्मिक जगत में सबसे महान वा ऊँचा है। ऐसी ऊँची हस्ती को आम मनुष्य पहचानने में पूर्णत: उसी प्रकार असमर्थ है जैसे आम गांव के मजदूर के लिए आइन्सटाईन के, मदर टैरेसा के इंसानी रूप को समझना असंभव है। देवात्मा के देव रूप से जो इंसानी रूहों का हित जुड़ा हुआ है, उसको अब तक इंसानियत नहीं पहचान सकी। यह बेहद कठिन काम है।

सड़कें बनाने वालों की तरह आरम्भ में देवात्मा को पहचानने वाले कुछ महान जन पैदा हुए, जिन्होंने देवात्मा के देवरूप की कुछ शिखरें देखी, देवात्मा के अद्वितीयपन को पहचाना। देवात्मा के सम्बंध की अज़मत को कुछ अनुभव किया। सारी मानवता के हित के लिए इस सम्बंध को अति आवश्यक देखा। उन चन्द मानवता के महान उपकारी जनों में से एक श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज भी हैं। श्रद्धेया कुमारी प्रेम देवी जी, श्रद्धेय

पंडित परमेश्वर दत्त जी, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, श्रद्धेय भाई मोहन देव जी और भाई अमर सिंह जी, यह सब वह महान इंसान हैं जिन्होंने सबसे पहले देवात्मा को पहचाना और अपने और मानवता के हित के लिए देवात्मा के सम्बंध की परम आवश्यकता को अनुभव किया। उनकी कुर्बानी बेमिसाल हैं, उनके चरणों की खाक जितना मानवता सजदा करेगी, उतना ही थोड़ा है। उन्होंने जो दुख, कष्ट, तसीहें, मुसीबतें, अपमान, खतरे, भूख प्यास काटी है उसका सही वर्णन नहीं हो सकता। इस मार्ग पर चलने पर माता पिता का विरोध सहना पड़ा, तो इन फरिश्तों ने झेला, किसी को माता पिता ने घर से निकाल दिया, माता पिता का विलाप, भाईयों की विरोधता, पत्नियों के आत्मघात करने की धमकियां, बदनामियों के तीर इन महान आत्माओं ने अपने वा मानवता के हित के लिए सहे। अपने आपको रूई की तरह गुरु मिशन के लिए धुन दिया। परन्तु हमारे लिए गुरु को पहचानने की एक सड़क तैयार कर दी। उनके उपकार को पूरा पूरा देखना हम कृतघ्न जनों के लिए बहुत कठिन है। उक्त उपकारी जनों में से अधिकतर तपेदिक के शिकार हुए, तिल तिलकर जले, परन्तु देवात्मा के सम्बंध की परम महानता को उज्ज्वल कर गए। यदि आज देवात्मा का जगत है, तो सब का सब उपरोक्त कुर्बानी के पुतलों का सदका हैं, उनके घोर तप, त्याग और न्यौछावर और निस्सार होने के जज़बे की कमाई देवात्मा का सारा जगत खा रहा है।

उक्त उपकारी जहां बैठ गए, वहां देवात्मा के कारज के महान क्षेत्र खुल गए। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने बाहिये में, भाई मोहन देव जी ने सिंध में, भाई अमर सिंह जी थराजवाला में, किसी ने अम्बाला में डेरे लगा दिए। इन स्थानों में देवात्मा के अनुयायियों का छोटा सा जगत उभरता रहा, और एक विशाल काफ़ले का रूप 19 वी सदीं के अंत और 20वीं सदी के आरम्भ के दशकों में खूब पनपता रहा जिसका अपना ही एक सुनहरी इतिहास है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने पहले महराज, फिर कल्याण डेरा लगा दिया, जिसके फलस्वरूप उन्होंने कल्याण, पूहला, पूहली, नथाना, अगता, बजुआना महाराज, मंडी रामपुरा फूल, लहरा, कोठागुरू, बीबी वाला, डबवाली, गुरूथड़ी आदि गांवों में एक बड़ा शानदार देवात्मा के प्रचार का और आत्मा के सुधार का क्षेत्र स्थापन कर दिया। अछूतों की तरह हाथों में रोटी लेकर खानी पड़ीं, डाकुओं की झिड़कियां, धमकियां, सहनी पड़ीं, सिर के ऊपर अपना बिस्तर उठाना पड़ा। पैदल रेत के टीलों पर सफर करने पड़े। भूख, प्यास, अनादर और तसीहें झेलने पड़ें। परन्तु हमारे गांव के डाकुओं के सरदार बदल दिए, डाकुओं के घरों में शान्ति भवन खोल दिए। डाकुओं की ज़मीन में मन्दिर बन गए। बजोआना में महोत्सव मनाए गए। देवात्मा ने स्वयं उस धरती पर चरण डालकर उसको कई बार पवित्र किया। लड़कियों के स्कूल होस्टल समेत पूहले और डबवाली में खुल गए। बच्चों का स्कूल कल्याण में खुल गया, जोड़ा सरदार बदल दिए जहां से गुरु मिशन को ईश्वर सिंह जी प्राप्त हुए। महराज से श्रीमान धर्मबल जी, श्रीमति सुशीला देवी जी आकर मिशन पर निस्सार हुए। और क्या कुछ हुआ उसका ब्यान करना कठिन है। बाहिये के रेतले इलाके में श्रीमान जी ने देवात्मा के अद्वितीय प्रभावों को

अधिकारी आत्माओं तक पहुंचा पहुंचा कर एक सुन्दर फुलवाड़ी में बदल दिया। श्रद्धेय श्रीमान जी के घोर तप सदका मेरे श्रद्धेय पिता जी का हित होना शुरू हो गया। जैसा कि आवश्यक था, पिता जी मोटे पापों के शिकार, मिथ्या का शिकार होकर, अपनी बर्बादी के मार्ग पर पड़े हुए थे। उस समय श्रद्धेय श्रीमान जी की महान कुर्बानी और उपकार सदका उनको गुरू महाराज जी के तुच्छ सेवक बनने का महा सौभाग्य प्राप्त हो गया जिससे हमारे अति दीन हीन परिवार के अथाह हित का सूत्रपात हो गया।

श्रद्धेय श्रीमान जी ने मेरे पिता जी को सांसारिक सहायता देकर, मेरे भुआ जी को पढ़ने के लिए, एक एक जगह रखा और आखिर उन्हें trained teacher बना दिया। उनकी शादी, जो उन्होंने डाकुओं के सरदार बदले थे, उनके नेक सीरत भानजे से करवा दी। यह शादी की रसम लाहौर जैसे शहर में गुरु महाराज की हजूरी में, उनके आशीर्वाद से हुई। श्रद्धेय श्रीमान जी ने मेरे एक चाचा जी को एक सम्पन्न परिवार में रखा और वहां से फौज़ में भर्ती हो गए, पहले महायुद्ध में वह शहीद हो गए। श्रीमान जी ने मृत्यु और शादी पर अपनी पहुंच से अधिक खर्च न करने की ताकत पैदा की। बिना कारण परिवार इन दो हालातों में लोकलाज में उजड़ जाते हैं। श्रीमान जी की कृपा से हमारा परिवार बच गया। मेरी दो भुआ की शादियां सादे ढंग से करवाकर हमें करज़ाई होने से बचाया। मेरे पिता जी को मिथ्या और पाप से बचने का बल दिया, यह हम पर बहुत बड़े उपकार हैं जिनकी महानता बताई नहीं जा सकती है। पिता जी यतीम हो गए थे। नम्बरदारी का बोझ उनके सिर पर आ गया। तीन भाई और तीन बहनों के बड़े परिवार की इतनी बड़ी जिम्मेवारी। इस सब को पूरा करना कोई सरल काम नहीं था। यह सब सहायता गुरू के दरबार से श्रद्धेय श्रीमान जी के द्वारा मिली, जो काम असम्भव दिख रहे थे, गुरु कृपा से सब सम्भव हो गए। मैं श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के परलोक गमन के 6-7 वर्ष बाद में पैदा हुआ। मुझे जन्म से ही एक गुरु के सेवक परिवार में परवरिश पाने का सौभाग्य मिला और मैं सदा के लिए मोटे पापों से सुरक्षित हो गया। गुरु दर की विशेष कलचर में पलने के बहुत लाभ प्राप्त हुए।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का जीवन और उनकी कुर्बानी और उनका धर्म प्राप्ति के लिए महा तप मुझे बचपन से ही बहुत प्रभावित करता रहा है। बेशक मैं कई मिथ्याओं का शिकार तो हो गया था, परन्तु गुरु मिशन में आकर अपना सच्चा भला करने की सोच में श्रद्धेय श्रीमान जी के अति महान जीवन का ही बहुत बड़ा हाथ है। उनके उदाहरण ने मुझे सदा ही उच्च प्रेरणा दी है और मेरे कदम आगे बढ़ाए हैं।

श्रद्धेय श्रीमान जी के जीवन से मैंने बहुत बड़ी बड़ी शिक्षाएं ली हैं। उनके त्याग को देखकर कोई कुर्बानी भी मुझे न बड़ी लगी है और न कठिन। जैसे पदों से मुक्त होकर उन्होंने गुरु चरणों के साथ को गुरू घर की टट्टियां साफ करके भी प्राप्त करने की इच्छा प्रगट की थी, उसने मुझे देवात्मा के प्रभावों और उनके दर की सेवा के अवसर के बिना और किसी भी चीज़ का अधिक आकर्षण रहने नहीं दिया। हर कीमत पर गुरु के प्रभावों से उनके मिशन की सेवा ही मुझे कीमती वस्तु प्रतीत होती रही, इससे मेरा बेहद हित और रक्षा हुई है।

श्रद्धेय श्रीमान जी ने देवात्मा के देवरूप तक, उनकी ज्योति शक्ति प्राप्त करने के लिए जिन साधनों द्वारा अपने लिए मार्ग बनाया, वह अद्वितीय उदाहरण है। देवात्मा के दर पर आना, उनके अद्वितीय कारज में सेवाकारी होना ही बेशक बहुत बड़ा सौभाग्य है, परन्तु इस सब की प्राप्ति भी मनुष्य को न देवात्मा का रूप देखने देती है, और न ही उनके साथ कोई सच्चा सम्बंध ही बनाने देती है। श्रद्धेय श्रीमान जी ने उच्च साधनों का बिल्कुल नया और अलौकिक इतिहास रचा है। हर व्यक्ति जो अपना सच्चा हित चाहता है, उसका उन साधनों का गहराई से अनुकरण करना अति आवश्यक है। "मेरी उच्च बोध विहीन और अधम अवस्था के परिवर्तन की कथा" मेरे मोक्ष और विकास विषयक साधनों की कथा, "आत्म बोध का सर्वोच्च अधिकार और उसकी प्राप्ति के बिना, मेरी अत्यन्त कृपा पात्र अवस्था।" यह ऐसे अलौकिक अनुभव है, जिनकी प्राप्ति हर आत्म हित आकांक्षी के लिए सदा सदियों तक एक चुनौती बनी रहेगी। मुझे यह लेख अत्यंत कीमती बोध होते हैं और अपनी योग्यता अनुसार उनसे लाभ उठाने के लिए सदा यत्नशील रहा हूं। देवात्मा के सर्वोच्च रूप तक पहुंचने के लिए दुर्बल मानव के लिए यह सड़क का काम देते हैं।

अपने प्रकृत रूप को देखने, अपनी नीचता की वास्तविकता और विशालता को समझने के लिए श्रद्धेय श्रीमान जी का जीवन, उनके अपने ही फरमान के अनुसार मेरे लिए सदा लाईट हाऊस का काम देते रहे हैं और मैं उसी मार्ग पर चलने का अपनी योग्यता के अनुसार संग्राम करता हूं। इसने मुझे नई दुनिया का वासी बनाया है।

आत्म हित के मार्ग के सच्चे मुसाफिरों के लिए श्रीमान जी का जीवन सदा एक अचूक गाईड का काम करता है। कोई मनुष्य इससे बढ़कर मानवता पर कोई उपकार नहीं कर सकता।

मैं श्रद्धेय श्रीमान जी के हमारे परिवार के लिए परम हितकारी रूप को जब भी देखता हूं तो उन रेतीले राहों पर, जिन पर आपने चरण डाले, मैं बेबस होकर सजदा करने के लिए और उन राहों की मिट्टी मुट्ठियों में उठा उठाकर मस्तक पर लगाने के लिए मजबूर हो जाता है। हमारे परिवार के परम हित का द्वार खोलने के लिए उनकी देन इतनी भारी और कीमती है कि उसका दर्शन नहीं हो सकता। इतने बड़े महान उपकारी की देन का कर्ज़ा चुकाना असम्भव है न ही उस उपकार को उतारने के लिए कुछ हो सकता है। उनके पाक चरणों का ध्यान धरकर उन पर बार बार मस्तक रखकर धन्यवाद देते रहने के सिवा, मेरे जैसा तुच्छ वजूद और कुछ भी नहीं कर सकता।

तुम जो आगे बढ़ गए, मुड़ देखना पीछे ज़रा धर्म सम्बंधी कोई,
तुमको पुकारे साथियों बेनती मेरी है तुमसे और गुरु भगवान से हो
सुफल जीवन मेरा, तुमरे सहारे साथियों।

श्रीमान मनोहर लाल जी

श्रीमान मनोहर लाल जी समाज के विशेष कर्मचारी हुए हैं। आप ने अपना सारा जीवन गुरु महाराज के मिशन में समर्पण कर दिया था व आखरी सांस तक गुरु मिशन की सेवा में रत रहे। उनके जीवन को कई वर्ष से नजदीक से देखने का अवसर मिलता रहा है। उनका जीवन मेरे ऊपर प्रभाव डालकर भला करता रहा है। इसलिए रूहानी जगत में आप भी उपकारी हैं।

आप एक अग्रवाल श्रेणी के साथ सम्बंध रखने वाले थे। आप सोलन में अपनी दुकान पर काम करते थे। आप को श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी द्वारा प्रभावित होने का व गुरु महाराज जी के काम में लगने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपको श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी के द्वारा ही शिक्षित होने का विकासालय में रहकर बहुत लाभ प्राप्त करने का अवसर मिला। आज वह अवसर नायाब है। उन्होंने सुनहरी समय में विकासालय पास किया।

आप एक बहुत दुबली पतली शख्सीयत के मालिक थे। आप ने मोगा, सोलन, दिली, बठिंडा आदि क्षेत्रों में प्रचार सेवा का अपनी योग्यता अनुसार बहुत उत्तम काम किया। मुझे मोगे विकासालय में आपकी संगत का कई साल अवसर मिला। हम एक ही कमरे में दो अलग अलग भागों में रहते थे। हमारे बीच में एक लकड़ी की ही पार्टीशन थी। हम आपस में खूब बातें करते रहते थे।

श्रीमान मनोहर लाल जी पूजनीय देवशास्त्र के विशेष पंडित थे। वह खूब उसका बार बार पाठ करते थे। गुरु महाराज की शिक्षा का अनुभव गहराई से रखते थे। वह बहुत इच्छुक जनों को शिक्षा देते थे। मुझे भी आप इसी तरह कीमती सहायता करते रहते थे।

आप अच्छे साधनशील थे। आप अपना साधन निष्ठा के साथ करते थे। साधन करने की हर अधिकारी को प्रेरणा देते थे। जब उनको विशेष मात्रा में देवप्रभाव मिलते तो वह खास जोश में आ जाते व उच्च सत्यों का जोश से भर भर सभाओं में व क्या बाहर जगह जगह प्रचार करते। वह साल में कई बार प्रभावित होते व उपरोक्त जोश से भरते जिस का सब हाजरीन को आभास होता।

आप सादगी की मूरत थे। आप सस्ते से सस्ता मैले लटठे का कपड़ा प्रयोग करते, उस के ही कमीज पायज़ामा आदि सिलवाते। इसके अलावा और कोई कीमती कपड़ा नहीं बनवाते थे। आप बहुत सस्ते कपड़े व काले बूट (बिना फीते) पहनते थे। एक काली टोपी रखते। इसके इलावा और कोई वस्त्र का प्रयोग न करते थे। सर्दी में कोट, कम्बल आदि रखते। उनसे सादा व्यक्ति और मैंने नहीं देखा। अपनी सादगी पर गर्व करते थे व मान से भरे रहते थे। उनके अंदर छोटेपन का कोई कम्पलैक्स न था। आप परले दर्जे के कफायतशुआर व संयमी थे। आप बहुत ही थोड़ी मासिक वृति पर गुजारा करते थे व खुश रहते थे। आप अपने ऊपर खर्च करने के लिए बिल्कुल ही चाहवान नहीं थे। आप एक पैसा भी फिजूल खर्च नहीं करते थे। आप की

खुराक बहुत ही सादा थी। आप रोटी की जगह केले खाकर भी गुजारा कर लेते थे। आप कभी किसी से भी पानी लेने को तैयार न होते थे। आप को अपनी जरूरतों की पूर्ति पर पूरा संतोष था। आप कोई दबाब के नीचे आकर संयमी नहीं थे। आप इस लाईफ स्टाइल को ही एक साधु के लिए पसंद करते थे। और खर्चा लेने व अपने ऊपर खर्च करने की कोई लालसा नहीं थी। उनको कोई जोर लगा कर भी अपने ऊपर ज्यादा खर्च करने के लिए मनवा नहीं सकता था। उनका यह वैरागी व त्यागी जीवन हर अधिकारी मनुष्य को प्रभावित करता था। मुझे भी आप के जीवन ने सदा प्रभावित किया व मेरा बहुत भला किया।

आप पक्के परहेजगार थे। आप नमक मिर्च मिला कर बिल्कुल भी नहीं खाते थे। आप डालडा नहीं खाते थे। उपरोक्त चीजों के विरुद्ध प्रचार करते रहते थे। आप सूखी रोटी खाते थे व इसमें ही तृप्त रहते थे। आप नौजवान सत्संगी विकासर्थियों को नमक मिर्च छोड़ने के लिए ज़ोरदार प्रेरणा करते ही रहते व शायद ही कोई नौजवान ऐसा होता जो उनकी प्रेरणा को स्वीकार न करता। मुझे भी शुरू शुरू में 55-56 में उनसे व उनसे प्रभावित साथियों की प्रेरणा के कारण नमक छोड़ने का अधिकार प्राप्त हुआ जिस पर मैं आज 47-48 वर्षों से ही कायम हूं। सेहत को लेकर कई डाक्टरों की प्रेरणा भी मुझे नमक खाने के लिए तैयार न कर सकी। मुझे इससे बहुत फायदा पहुंचा है।

आप समय के बहुत पाबंद थे। आप सभा करवाने, विज़िट करने व घंटा बजाने की डियूटी एक साथ निभाते रहे थे। कई बार, आप भाग कर बाहर से विकासालय पहुंचते ताकि घंटा बजाने की डियूटी समय के साथ निभा सकें। समय की पाबंदी ने उनको वायदों का भी पाबंद बना दिया था। आप अक्सर अपने सभी उचित वायदे पूरे करते थे। हर किसी के पत्र का उत्तर ठीक समय के साथ देते थे। यह पक्ष भी आपके जीवन का एक रोशन पक्ष था।

आपकी ईमानदारी तो कमाल की थी। अगर आपको ईमानदारी की मूर्ति कहा जाए यह गलत नहीं होगा। श्रद्धेय भाई मोहन देव जी व भाई अमर सिंह जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। परन्तु समाज में उनसे ईमानदार व्यक्ति के दर्शन करना मुझे अभी बाकी है। आप फल, सब्जी या कोई वस्तु खरीदते समय उसको हाथ नहीं लगाते जब तक उसका दाम चुका न देते। यह सब आंखों देखा है। आप विकासालय की रोशनी व किचन की अन्य वस्तुओं का प्रयोग करने के रुपए रसोई फंड में अपने आप जमा करवा देते थे। फूल तोड़ते समय कुछ टहनी आदि टूटने का जुर्माना आप देते थे। सांझे नल पर पड़ी साबुन से हाथ धो लेने से आप ने वहां साबुन की टिकी लाकर रख दी थी। गुरु महाराज ने मनोहर लाल जी को इतना पक्का ईमानदार बना दिया था उनके हाथ से हर किसी का एक एक पैसा खरा था। जिस समाज के वरकरों की ईमानदारी पर पब्लिक को नाज होता था, उन्होंने अपनी ईमानदारी से उस नाज को न केवल आंच न आने दी परन्तु उस विश्वास को उन्होंने बहुत बढ़ाकर समाज के गौरव को सदा बढ़ाया है। हमारे तुच्छ जीवनों को भी उनका जीवन ईमानदार रहने के लिए सदा प्रेरणा का उपकार करता है।

आप एक ठोस प्रचारक थे। आप प्रचार के

मकसद को लेकर हमेशा पब्लिक में जाकर विज़िट करते व अधिकारी आत्माओं से पाप कर्म छुड़वाकर, उनको मिथ्या में से निकालकर गुरु महाराज के पक्के सेवक बना देते थे। श्रीमान मोहन दास जी, श्रीमान मदन लाल जी बजाज, श्रीमान ध्यान सिंह जी आदि उनके प्रचार के मोगे में सुन्दर फल थे। बठिण्डा के अंदर आप ने श्रीमान वर्मा नन्द जी व योग राज जी कौशल आदि को समाज के साथ जोड़ा। इसी तरह आप जहां भी प्रचार के लिए गए वहां ही उन्होंने अधिकारी आत्माओं को गुरु महाराज के साथ जोड़ा।

आप पदवी व हकूमत की भूख से बहुत ऊपर थे। आप यह सब समझते थे कि यह चीज़ें उच्च जीवन नहीं दे सकतीं। अगर वह स्वीकार करते तो बहुत पहले ही देवसमाज प्रबंध के मैंबर बन सकते थे। उन्होंने कभी भी ऐसा नहीं चाहा। आप ऐसी लालसा कि जिस के साधारण मनुष्य बेहद लालची होते हैं, मुक्त थे। आप एक सच्चे साधु थे। आप सांसारिक पदार्थों व सम्बन्धियों के मोह बंधन से मुक्त थे। आप किसी भी पदार्थ व सम्बंधी से मोह के साथ बंधे हुए नहीं थे। आप सच्चे वैरागी व त्यागी थे। वह किसी के भी मोह में फंसे हुए नहीं, हमेशा उदार रहे। उनकी बहन जी मोगे के अंदर थीं, आप कोई उनके साथ बंधे हुए नहीं थे। उनके हित को लेकर कभी उनसे मिलने जाते थे। इससे बढ़कर आप कोई मतलब नहीं रखते थे। उन्होंने श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी की विशेष छत्र छाया में रूहानी जगत में परवरिश पाई थी जिस कारण उनको अपने अहं कोश का मानसिक बोध हो गया था। आप जानते हैं कि अहंजात घमंड, घृणा मुझे दूसरों के दोष दिखाती है व उनसे टकराहट पैदा करती है। इसलिए आप किसी प्रबंधक कमेटी या प्रतिनिधि की सदस्यता से बहुत परहेज रखते थे। जब कभी बड़े उनको कह कर मैंबर बना देते तो आप वहां पर नोंक झोंक करते। नुक्स निकालते व किसी अंश घमंड घृणा के हवाले हो जाते। आप झट इस हानि को उपलब्ध करते व उस मैंबरी आदि से त्याग पत्र देकर ही चैन पाते।

उनको गुरु महाराज व उनकी अद्वितीय शिक्षा के ऊपर गहरी आस्था थी। आप निज हित को भी अपना लक्ष्य रखते थे। ऐसे लक्ष्य को रखकर ही आप अपना सारा संग्राम करते। आप बहुत ही विशेष अध्ययनशील थे। आप बहुत अच्छे साधक थे बहुत अच्छे प्रचारक थे।

उनका ध्यान अपनी कमजोरियों की तरफ जाता था। अपनी एक एक कमी को देखकर ही आप अपने आप को खूब लताड़ते थे। ऊँची ऊँची पुकारते थे। मनोहर लाल ऐसा, मनोहर लाल वैसा, अपने आप को गधा, पशु, पागल आदि कहने से भी नहीं हटते थे। आप अपनी एक एक नीचता सरलता के साथ लिखकर प्रगट करते थे। अपनी नीचता को सदा देखने में उत्सुक रहते थे। यह उनका पक्ष बहुत ही सुन्दर व कीमती था और उनके प्रति झुकाने वाला था। उनको धर्म संगत की कदर कीमत का सच्चा अनुभव हो चुका था। वह जैसे मछली की जान पानी में होती है वैसे वे अपने जान प्राण धर्म संगत में समझते थे। आप कई बार किसी बात से दुःखी होकर अपने घर पटना में गए तो दो दिनों बाद ही तारें आने लगतीं कि मैं फिर अब वापिस आना चाहता हूं। आप चंद दिनों में वापिस आते व चैन की सांस लेते। इसके लिए आप

सभा की बेदी पर बैठकर अक्सर पुकारा करते थे कि बेशक सभी यह दर छोड़ कर चले जाएं परन्तु मनोहर लाल की तो यहीं से लाश निकलेगी। उन्होंने यह बात सच करके ही दिखा दी।

वह शीघ्र ही अपने से छोटे साथियों का भी सम्मान करने लगते थे। मुझे पहले वह साधारण दिखते थे। उनसे मैं शिक्षा पाता था। उनकी सभाओं से मैं लाभ उठाता था। जब 1960 में मुझे उर्दू साप्ताहिक का सम्पादक बनाया गया तो आप कटाक्ष करते रहे। परन्तु कुछ समय के बाद मेरे प्रशंसक बन गए। उनके हाथों से पालना पाकर मुझे कौंसल का मैंबर बना दिया गया।

उन्होंने कभी इसकी विरोधता नहीं की। आखिर आप मुझे कई पक्षों में अपने से समझदार मानते थे। उन्होंने मुझे इतने सम्मानपूर्वक पत्र लिखे हैं कि जिसके लिए मैंने शरम महसूस करके पब्लिक में प्रगट नहीं किए।

उनके जीवन ने मेरे ऊपर बहुत प्रभाव डाला। वह सचमुच निरपक्ष साधु थे। उनका विशेष त्याग, विशेष ज्ञान, उनकी सादगी, उनकी पवित्रता, उनकी ईमानदारी, उनकी गुरु के लिए निष्ठा आदि सभी ही ऐसे गुण हैं जो मुझे हमेशा ही उस तपस्वी के आगे झुकाते रहते हैं।

गुरु महाराज के अद्वितीय प्रभावों की उनके जीवन में विशेष ही छाप थी। आप संसारिक जीव नहीं थे परन्तु धर्म जगत की ठोस मूर्ति थे। उनके जीवन की रंगत मुझे ज्यादा से ज़्यादा मिल सके, यह सदा ही कामना रही है।

श्रीमान बलकार सिंह जी की श्रद्धांजलि सभा 7 मई शनिवार को उनके निवास स्थान पर रखी गई। इसके लिए चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी (कल्याण से) व सुखदेव जी एक दिन पहले ही उनके निवास स्थान पर पहुंच गए थे। सुबह 11.00 बजे सभा शुरू की गई व शाम 2.00 के करीब समाप्त हुई। सभा बहुत ही प्रभावशाली थी। कुछ जनों ने देहत्यागी के गुणों, उपकारों आदि को बताकर उनको अपनी श्रद्धांजलि भेंट की जो बहुत प्रभावशाली थी। इसका विवरण अगले अंक में दिया जाएगा।

श्रद्धेय कनल जी

श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल साहिब गुरु मिशन के अति योग्य, प्रभावशाली चिंतक व महान कर्मचारी हुए है। वह अति उच्च व बहुत महान शख्सीयत थे। मुझे 5-6 वर्षों या इससे भी ज्यादा समय, उनके मोगे, फिरोजपुर व दिल्ली दर्शन करने का व उनके दुर्लभ उपदेश व व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। श्रद्धेय कनल जी एक बहुत ही महान व आकर्षणीय शख्सीयत रखते थे। सारा पंजाब उनके जीवन व करैक्टर की धाक मानता था। कई बड़े नेता, जिनमें मास्टर तारा सिंह जी भी एक थे, उनके लिए बहुत ही सम्मान व सत्कार रखते थे।

आप को गुरु महाराज के चरणों में रहने का, उनके पाक दीदार करने का, उनकी बानी सुनने का, उनकी कर्मचारी वर्ग को हिदायतें व फरमान, उनकी हजूरी में श्री चरणों में बैठ कर सुनने का महासौभाग्य 15-18 वर्ष प्राप्त रहा है। इसलिए आप का जीवन, विशेष ढांचे में ढला जीवन बना हुआ था।

क्या आप का जीवन, क्या आपकी शख्सीयत, क्या आप के व्याखान व क्या आप के लेख, क्या आप की सात्विकता सभी ही अधिकारी मनुष्यों को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकती। आपकी शहनशाह जैसी दिखने वाली शख्सीयत थी। सात्विकता का नूर आपके सुन्दर मुख मंडल पर चमकता था। आप का ऊँचा लम्बा कद, जार्ज पंचम जैसी चेहरे पर दाड़ी की छब आप की शख्सीयत को चार चांद लगाती थी। आप उस समय समाज व मानवता के गौरव के प्रतीक थे। आप देव समाज की शान थे। आपका सात्विकता भरा जीवन सदा ही अधिकारी मनुष्यों को प्रभावित करता रहेगा।

आप का जीवन देवात्मा सत्गुरु, देवत्व के अद्वितीय आविर्भाव के प्रभावों का एक शानदार क्रिश्मा था। आप की विशेष, अनोखी व शानदार पहचान थी। जिन्होंने श्रद्धेय कनल जी के दर्शन नहीं किए व उनकी सभाएं नहीं सुन पाए, उन्होंने अटूट घाटा खाया है।

आप सिंध प्रांत के पहले M.A. L.L.B. थे। श्री जय राम दास, दौलत राम आप के ही सहपाठी थे। वह सियासत में आकर भारत की पहली कैबनिट के, पंडित नेहरू के अधीन वज़ीर बने। कनल जी, देवात्मा के मिशन के एक अनोखे रुकन व सिपाही होने को ही बहुत बड़ा मान व फखर मानते थे। कनल जी आरम्भ में वकालत करते थे। उनकी वकालत शुरू में ही अच्छी कामयाब थी। आमदन खुली थी। आप की शादी (जात बरादरी तोड़कर) हो चुकी थी। आप जी श्रद्धेय भाई मोहन देव जी से बेहद प्रभावित होकर गुरु समाज से जुड़े थे। आप के कैरियर का आरम्भ ही था। आप को किसी चीज की कमी नहीं थी। परन्तु श्रद्धेय श्रीमान भाई मोहन देव जी की पाक संगत, उनके बड़े त्याग की आप के जीवन पर छाप लग गई थी। आप सांसारिक सुख स्वादों के पीछे अपनी आयु

बर्बाद नहीं करना चाहते थे। आप कोर्ट से आकर खाली समय बेबस रोने के लिए मजबूर हो जाते व अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती जी कनल को कहते कि क्या यह कचहरियों का कूड़ा ढोकर ही उम्र निकल जाएगी व अंत में मेरी अर्थी रोती हुई जाएगी? उनके हृदय की सात्विकता व वैराग, उनको अक्सर रोने के लिए मजबूर कर देता था। श्रीमति सरस्वती जी का हृदय भी कमाल था। आप भी पति की व्याकुलता से सांसारिक धन, पदार्थों को हेच समझती थीं। उन्होंने त्याग की ऐसी मिसाल कायम कर दी कि जो शायद ही किसी विवाहित स्त्री के सौभाग्य में आता है। उन्होंने अपने दिल में ही फैसला कर लिया और सारा सामान बांध लिया। लाहौर जाने के लिए रेल की टिकटें मंगवा ली। जब शाम को कनल जी घर आए तो वह देख कर दंग रह गए। धर्मपत्नी की तरफ से अपने लक्ष्य के लिए यह सहयोग देखकर उनकी खुशी की क्या सीमा हो सकती थी। इस प्रकार श्री कनल जी वकालत को व सांसारिक धंधे को सलाम कर सदा के लिए ही गुरु चरणों में पहुंच गए। लाख मुबारक है ऐसा त्याग व पाक वैराग्य। गुरु चरणों में आकर कनल जी ने गुरु मिशन में अपना आप पूर्ण रूप ये अर्पित कर दिया। आपकी सेवाओं का एक महान लेखक के रूप में, एक वक्ता व उपदेशक के रूप में व एक टीचर या प्रिंसीपल के रूप में व एक आदर्श सेवक व सम्बंधी के रूप में बांटा जा सकता है। उपरोक्त चारों पक्षों में ही आप का जीवन मुझ तुच्छ को बहुत प्रभावित करता रहा है व मेरा बहुत उपकार करता रहा है।

कनल जी को लिखने के लिए गुरु महाराज पुरजोर प्रेरित करते थे व हिदायत देते थे। उन्होंने ही कनल जी को 7-8 सौ सफे की गुरु महाराज की जीवनी इंगलिश में लिखने के लिए फरमाया था। कनल जी ने बड़ा तप करके वह जीवनी लिखी है। वह रात के दो दो बजे तक लिखते थे। कनल जी के लेखनी में से उनकी पुस्तक "द् लाइफ एंड टीचिंग" महान है। इस पुस्तक ने ही आखिरकार सारे संसार को देवात्मा को Introduce करवाना है। यह महान पुस्तक व अन्य इंगलिश की बहुत पुस्तकें हैं जो मानवता पर एक बड़ा उपकार है। देव धर्म के इंगलिश मासिक पत्रिका को 30 साल या इस से भी ज्यादा समय कनल जी एडिट करते रहे। कनल जी ने गुरु शिक्षा पर इतना लिखा है कि मानों दरिया ही बहा दिया हो।

कनल जी की लेखनी में कनल जी के दार्शनिक रूप व गुरु भक्त रूप में दर्शन होते हैं। उनका एक एक वाक्य, बाण की तरह दिल पर चोट करता है। Altruism पुस्तक के 11 भाग भी आप का ही विचित्र कृति है। यह जिंदा उदाहरणों को लेकर प्रश्न उत्तर के रूप में आम मनुष्य के लिए बेहतरीन पुस्तक है। कनल जी ने My Bhagwan, what I saw of Him बड़ी पुस्तक लिखी है। इसमें आप की श्रद्धा के दर्शन देखते ही बनते हैं। My story उनकी स्वलिखित जीवनी भी अति प्रभावशाली पुस्तक है। अन्य In Thy Light, What Worked These Miracles, Fundamental of Moral & Spiritual Life in Universe जैसी दर्जनों पुस्तकें व अन्य लिखी हुई पुस्तकें बहुत ही शानदार व अति जरूरी कृतियां हैं। आपके लेखक रूप को चंद लाईनों में पेश

करना अति कठिन है। समाज का लगभग सारा ही इंगलिश साहित्य आप जी का व आपके सुयोग्य बेटे की देन है। मानवता सदा सदा के लिए आपकी लेखनी के महाउपकार के लिए अधिकारी मनुष्यों के लिए अखान बन गए हैं।

आप का जीवन सात्विकता का साकार रूप था। आप के उपदेश व लैक्चर सात्विक रोशनी से हुए होते थे। मैंने उनको सभा करवाते करवाते भावुक होते देखा है। आप सभा करवाते करवाते फूट फूट कर रोने लग पड़ते थे। आप की सभा सुनने के लिए लोग आखिर तक उतावले रहते थे। महोत्सव पर आप के मिथ्या के खंडन पर लैक्चर बहुत जनों की न भूलने वाली याद बन गए हैं। आप शेर की तरह लाहौर में गरजते थे व गुरु शिक्षा की श्रोताओं पर छाप लगाते थे। आप जिंदा घटनाओं के सागर थे। अति प्रभावशाली घटनाओं का पुरजोर ब्यान फरमाते रहे। महोत्सव पर महा सभा करवाते करवाते आप श्रद्धा विभोर हो जाते थे। आप फरमाया करते थे कि मेरे लिए "देव जीवन क्या है?" दो शब्द एक नया संसार खोल देते हैं। आप की बाणी श्रद्धा से ओतप्रोत थी जो अधिकारी आत्मा को प्रभावित करे बिना नहीं रह सकती थी। आप विकासालय व प्रचार पार्टी के साथ जा कर सभाएं करवाते थे। आप की शख्सीयत ही प्रचार का काम करती थी।

आप एक लाजवाब अध्यापक व प्रिंसीपल थे। आप बच्चों के साथ मां का सम्बंध महसूस करते थे। आप अपने काम में पूर्ण समर्पित थे। आप कभी प्रिंसीपल व कभी जरूरत पड़ने पर चपड़ासी, कभी पानी भरने वाले, कभी डैस्क साफ करने वाले भी बन जाते थे। आपने तीनों कालिजों में काम किया। पहले लाहौर, फिर R.S.D. कालिज फिरोजपुर जो उस समय समाज प्रबंध के अनुसार चलता था। फिर देवसमाज कालिज फॉर वुमिन में। आप की इलमीयत का स्तर साधारण टीचरों से लाखों गुणा ऊँचा था। आप दर्शन के विषय के अध्यापक थे। परन्तु जरूरत पड़ने पर अंग्रेजी, हिस्टरी, पोलटिक्स, मनोविज्ञान आदि अन्य विषय भी पूरी योग्यता के साथ पढ़ा देते थे। आप की सात्विकता अपने विद्यार्थियों के प्रति बहुत ही प्रकाश पाती थी। आप सर्दी में ठिठरे विद्यार्थियों को अपना कोट भी उतार कर देते थे। कहीं एक एक विद्यार्थी के कोट सिलाने का प्रबंध आप करते थे। उनको पता लगता कि आज अमुक विद्यार्थी परेशान रहेगा। उस को मिला दंड व वार्निंग उस को खाना खाने नहीं देगी तो आप पहले उस विद्यार्थी की परेशानी दूर करने के लिए उसको भोजन खिलाने का फिक्र रखते व बाद में आप खाते। एक एक गरीब जरूरतमंद विद्यार्थी की मजबूरी का ध्यान रखकर सारे कालिज का टाईम टेबल बदल देते। विद्यार्थियों की फीसें, किताबें व अन्य जरूरतों का ख्याल व उनको पढ़ाने का फिकर तो उनके रोज का काम था। आप के उस्ताद होने की छाप उनके सब विद्यार्थियों पर पड़ती थी। वह हमेशा ही इस सौभाग्य को फखर व मान के साथ याद करते। उन्होंने लड़कियों के कालिज की डोर संभाली, लड़कियों को बेटियों की तरह आप छाया देते थे। आप स्त्री शिक्षा के भरपूर हामी थे। आप ने B.T. Class उनके लिए जारी करवाई व सारे पंजाब, दिल्ली, यू. पी., बम्बई आदि जगहों से लड़कियों को B.A. B.T. करते देख कर बहुत प्रसन्नचित होते व कहते कि

किसी लड़की की गोद में बालक देखकर मुझे वह लड़की मरियम व बालक मसीह दिखने लग जाते हैं। कनल जी नीति शिक्षा हमेशा देते थे। उसमें जीवन की सच्ची घटनाएं होती थी। आप की नीति शिक्षा सभी विद्यार्थियों व प्रोफेसरों के लिए बहुत दिलचस्पी का कारण होती थी। नीति में सुनी सचाईयां विद्यार्थियों को हमेशा याद आती रहती थीं व उनके जीवनों को सींच देती थीं।

मुझे उनके विद्यार्थियों को मिलने का अवसर प्राप्त हुआ जिनका देवसमाज के साथ दूर का भी सम्बंध नहीं था। वह किस प्रकार उनके बोले वाक्यों पर विखास करते व सम्मान करते थे। जवान लड़कियों को कोई बाप बन कर पढ़ा सकता था। लोग अपने घरों से बढ़कर अपनी बेटियों को उनके पास सुरक्षित समझते थे। एक मुसलमान खुलेआम कहा करता था कि हमारी लड़कियों की रक्षा के लिए परमात्मा ने देव समाज बनाई है। यह Tribute Kanal जी के जीवन को विशेष करके प्राप्त था। वह महान टीचर के साथ साथ एक friend, Philospher व guide भी पूरे थे।

उनके टीचर रूप का ब्यान करते हुए एक विशेष बात बतानी बहुत जरूरी है। वह यह है कि आप सादा प्रिंसीपल थे। उन्होंने न कभी अपने अधीन संस्थाओं को कभी धन प्राप्ति का साधन बनाया व न कभी अपने आप को। न ही ध न व अन्य सुख आराम प्राप्ति की इच्छा रखी या पूरी की। उनके समय वह संस्थाएं भी एक मन्दिर थीं जिसमें कनल जी अपने सेवाओं द्वारा पूजा करते थे।

कनल जी सात्विक भावधारी एक फरिश्ता इंसान थे। दुनियापरस्ती व दुनिया के साज सामानों के मोह से आप पूर्ण रूप से ऊपर थे। उन्होंने अपनी किसी संतान की शिक्षा के बिना समाज से कोई किसी प्रकार की सुख सुविधा प्राप्त नहीं करने दी। कोई अदना स्वार्थ पूरा नहीं किया। आप के लिखने, प्रचार करने व दान मांगने के दौरे प्रसिद्ध थे। उनकी धर्मपत्नी भी बहुत मुश्किल परिस्थितियों में भी बारबार इस काम में संग्राम करती रही।

आप एक अति सुगड़ व कामयाब पति थे। गृहस्थ जीवन की रोशनी थे। एक प्यार भरे पति थे। एक उच्च कोटि के कर्मचारी थे। एक गम्भीर गुरु भगत थे। महान त्यागी थे। सम्बंधों की शिक्षा में माहिर व धनी थे। उच्च योग्यताओं के कण्ठ मुक्त प्रशंसक थे। आप की श्रद्धा आसमानों को छूती थी। इस में डूबे वाक्य, उच्च साहित्य का रूप धारण करते थे।

आप जैसे महान व योग्य कर्मचारी सदियों सदियों के बाद ही भले प्राप्त हो सकते हैं। आप का आठवीं कक्षा पास के प्रति यह Tribute कि "हजार कनल एक धर्मबल पैदा नहीं कर सकता। एक धर्मबल हजार कनल पैदा कर सकता है, यह आपकी सात्विकता की बोलती तस्वीर है।

आप का एक बड़ा उपकार समाज को काका जी की देन है। आप अपना महान, अति योग्य, अति उच्च शिक्षा प्राप्त बेटा गुरु मिशन के लिए कुर्बान होने के लिए दे गए।

आप का व्यक्तित्व Prism की तरह भिन्न भिन्न किरणें छोड़ता था। आप का गुरु मिशन के लिए 37-38 वर्ष कुर्बान होना, हमारे ऊपर व सारी मानवता पर बहुत बड़ा उपकार था। समय के साथ ऐसे सितारों की जरूर ज्यादा कदर पड़ेगी व उनकी शान के नगमे बनाए जाएंगे।

PEARLS SUBLIME .....

Proclamations of Bhagwan Devatma freely translated from "*Param Poojniya Bhagwan Devatma ke besh baha vachnon ka gutka*" published in Urdu in 1964.

IN RELATION TO DEVATMA (Continued from the previous issue)

15. I want to usher in such a faith and religion on this earth that may annhilate all types of sin and evil in this world.

16. It is not that I like the agony that I have to bear in doing good to others, rather being compulsive lover of the truth and goodness, I can't help taking that misery upon myself.

17. He who is self willed is not and cannot be my follower. He may say that he is devoted to his wife and he is for his children, he is for name and fame but he cannot say, with sincerity, that he is devoted to the Devatma.

18. "O' lord (the Devatma), I love you." It is easy to say so, but do you carry any symptoms of this love in you? If not, you are simply bragging of love.

19. To the extent any soul is attached to me and is under my influence, to that very extent it becomes imperative for him to show love and respect to all such souls who are attached to me and are under my influence and feel oneness with them. He, who goes contrary to this principle, cannot be mine.

20. I am not prepared to believe for a moment that any force based on untruth, injustice or evil can ever ultimately overpower my forces of compulsive love for the truth and goodness because such a thing is absolutely against the law of evolution in nature.

(Continued to the next issues)

References:

15. (Mujh Main Dev Jiwan Ka Vikas Part I, 1st Ed. P. 266)
16. (Satya Dev Samvad 12.8.30)
17. (As above)
18. (As above)
19. (Mujh Mein Dev Jiwan Ka Vikas, Vol 1)
20. (Jeevan Tatva 6.12.21)

A Treat for the Blossoming Souls

Sewaks! Beware of Great Illusion

Take the Case of a peon in some school who carries no desire to study and become a scholar in spite of remaining in the school and seeing the students learn and teachers teach. Likewise, in a true spiritual society where the mission of eradicating the evil and infusing higher feelings is being carried out by the true higher life-imparting lord (Bhagwan Devatma), there are many such persons who, though, are found to be free from several major sins, yet, no desire for acquiring true higher life is seen in them. Despite being members of a true and living spiritual society, they pass their days devoid of any longing for higher life. What a terrible condition! What a heartrending sight!! Thou, *Sewaks* of the Dev Samaj! You all deeply think and see what is your plight.

It is true that on hearing the forceful unique spiritual sermons of Bhagwan Devatma, a desire has arisen in so many hearts to do good to their own life and also serve their race and country. With this motivation many persons have, at times, also completely offered themselves solely for the extremely benevolent mission of the Dev Samaj. Although several others have not fully dedicated themselves, yet they have devoted their more or less time for this great mission. But it is a matter of extreme sorrow that the strong lower-self present in them again overpowered them on getting an opportunity. The aforesaid lofty spiritual desire that had sprouted in them, being weak, got subdued again. In many cases, it gradually got totally extinguished. The result was that, in a short while, some persons, finding no satisfaction of their low desires, either left the society or were turned out. Some persons who were comparatively lesser evil minded did not part with the society and stayed on fulfilling all the conditions of its membership. In some respects they proved to be quite helpful. But they too could not stick to the aforesaid lofty aim. So much so that some persons who did remain constantly contributive, they too were motivated only or mostly by their low desires instead of being inspired by any higher feeling or lofty desires. This did result in some definite output. But, as expected, their work could not prove to be higher life imparting for themselves or for others. Many *sewaks* spent several years in this state of affairs and they also substantially helped the society in various aspects. However, as far as higher life is

concerned, they could neither benefit themselves nor others. Why was it not so? In answer to this question, it can only be said that such type of *sewaks* could not sufficiently and continuously stick to the higher aim. They could either not undertake the type of requisite spiritual exercises for keeping themselves awake and developing in higher life or if they took up such spiritual exercises, they could not keep going with them. Hence, the degradation. Therefore, they could not attain the heights of higher life even after putting in years of continuous work for the society. The way the peons in schools remain bereft of education after remaining in and working in a school, in the same way, they also remained devoid of higher life and its growth. What a terrible plight! What a heart piercing sight! What great blindness!!! What a deviation from the true path of life!!!!

Now see whether those persons who are themselves astray from the path of higher life, or those who followed the right path to a certain distance and then became a victim of their lower self, got astray under its sway. Do such persons deserve to hold the reins of a true spiritual society? No, not at all. Can such persons deserve to administer a unique spiritual society such as the Dev Samaj if they have neither awakened to their various evil acts, nor have they got riddance from them? Can those persons become the ideal of the unique spiritual society such as the Dev Samaj in whom either higher life has not even sprouted or has got extinguished after budding or a small fraction of the same exists in them? No, never! Never!. Then how foolish and blind are those *sewaks* who even forget their true and complete ideal of life, i.e., Bhagwan Devatma due to their illusionary bondage with one or the other such persons? Instead of becoming compulsive lover, believer and follower of only Bhagwan Devatma above all, they become greater lover, believer and follower of some other person. Aren't those persons even more foolish who attempt to remove the true, complete ideal, saviour and spiritual guide, Bhagwan Devatma in order to occupy His place themselves? May such type of foolishness, blindness and viciousness disappear as soon as possible because it is equally extremely harmful for the aforesaid type of *sewaks* and the society!

(English rendering of article from "Param Poojniya Bhagwan Devatma Ke Lekh Aur Updesh" Vol. III, P. 213-217, Dec. 1939)

शुभ संग्राम
(2 मार्च– 13 मार्च)

मल्लेका (सिरसा) शाम 8.00 बजे पदमपुर से श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान ओमप्रकाश जी वर्मा, श्रीमान बलबहादुर जी मल्लेका (हरियाणा) 8.00 बजे पहुंचे। सभा स्थान पर विछाई की हुई थी। कई धर्म सम्बंधी ट्रैक्टर द्वारा पहुंच गए। 8:15 बजे तक सभा शुरू हुई। तब तक 55–60 के करीब हाजरी हो गई थी। इस सभा के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। जिसमें यह बताया गया कि धर्म से इन्सानीयत की यह मांग है कि उसको जाति तौर पर नीच भावों से जो खतरे हैं उनसे बचाया जाए। नशा प्रेम व उसकी गुलामी का जिक्र करते हुए श्रीमान स: अनोखा सिंह जी व श्रीमान पंडित नेत राम जी के जीवन परिवर्तनों का संक्षेप में सुन्दर दृश्य पेश किया गया। उनके जीवन न सिर्फ उनके लिए बच गए परन्तु समाज सेवा के लिए भी बहुत सराहना योग्य उदाहरण पेश किए गए।

धर्म का कारज निजी रक्षा व आगे पारिवारिक व सामाजिक सेवा है। जो जन इस सच्चे धर्म कारज में योगदान देते रहेंगे, उनका अस्तित्व बना रहेगा व विकास पाता रहेगा। भगवान देवात्मा ने देव धर्म की स्थापना करके यह निराला धर्म कारज किया जो धर्म की सभी मांगे पूरी करता है। पाप सम्बंधी (आठ) प्रतिज्ञाएं हमारी रक्षा का बीमा कर देती है। बर्बाद होते जीवन बच जाते हैं। परिवार उजड़ने से बच जाते हैं। समाज सेवा में उत्तम योगदान देने के लिए आत्मा प्रेरणा व उत्साह महसूस करते हैं। सभापति ने अपना निजी परिवर्तन भी बताया कि देव प्रभावों का ही अद्भुत क्रिशमा है। देव धर्म की महिमा वर्णन करते हुए यह सभा 11.00 बजे के करीब समाप्त हुई।

11 मार्च सुबह एक सभा की गई। इस सभा के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिह जी थे। इसमें 50 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि मनुष्य हर कार्य अपने भावों से प्रचालित होकर करता है। अगर उच्च भावों द्वारा परिचालित होकर हम कोई काम करते हैं तो हमारा निवास धार्मिक दुनियां में हो जाता है। गुरू महाराज किस प्रकार अधिकारी आत्माओं में धार्मिक भाव पैदा करते हैं उनका वर्णन विस्तार से किया गया। विशेषकर हानि परिशोध के बारे बताते हुए कई उदाहरणों द्वारा इस सत्य को पेश करने की कोशिश की गई कि किस प्रकार इस भाव द्वारा सम्बंधों में स्वर्ग आ जाता है। श्रीमान हरनाम सिंह जी ने बहुत ही दु:खी हृदय से अपने नौकर से अपनी गल्ती के लिए माफी मांगी। आप के ब्यान से सभा में बहुत ही अच्छा वातावरण बन रहा था। हाजरीन गुरू महाराज के आगे झुकते हुए महसूस हो रहे थे।

2 बजे दोपहर : यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई जिसमें उन्होंने बताया कि धर्म अच्छे बनने का नाम है। अच्छे अमलों से ही अच्छा बना जा सकता है। सबसे पहले तो हमें शिष्टाचार आना चाहिए। फिर सभापति जी ने बताया कि हमें भौतिक जगत के साथ किस प्रकार सम्बंध महसूस करना चाहिए। उनको तरतीब व परिपाटी में लगा कर रखना चाहिए। यह सभा बहुत प्रभावशाली व प्रेरणादायक थी जिससे हाजरीन बहुत प्रभावित हो

रहे थे। 8.00 बजे रात को सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति पर रोशनी डाली गई। जब भी मनुष्य को किसी सुख व उसकी इच्छा पर चोट लगती है तो उसके अंदर नीच घृणा पैदा होती है। उस घृणा से बड़ा अनर्थ होता है। एक शराबी रिक्शा वाले ने सारा परिवर कत्ल कर दिया। एक बहुत बड़े डाक्टर ने एक लड़की के मुंह पर तेजाब डाल दिया। पर खुद को जेल की हवा खानी पड़ी। सभापति जी ने अपनी जिन्दगी की कई घटनाएं बताई। भगवान देवात्मा की रोशनी ने नीच रागों व घृणाओं की खौफनाक अवस्था दिखाई है व उसमें हैरानी भरा शुभ परिवर्तन पैदा किया। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बड़े सुन्दर उदाहरणों का वर्णन करके प्रभावशाली बना दिया। श्रीमान हरदेव सिंह जी के बेरों का प्रसाद बांटा गया।

12 मार्च 2005 को सवेर 8.30 बजे : यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कृतज्ञता के विषय पर करवाई। कृतघ्नता के बारे में सुन्दर ब्यान किया गया। इस का महा घृणित रूप पेश करने की कोशिश की गई। 60 के करीब हाजरीन ने इससे लाभ उठाया। भगवान देवात्मा ने अपने प्रभावों के द्वारा अनेक जनों को कृतघ्नता के महापाप को दिखाया है व उनसे बचाकर अपने उपकारियों के प्रति शुक्रगुजार बनाया है। देवात्मा के सच्चे धर्म कारज का बहुत प्रभावशाली ब्यान किया गया। कई श्रोतागण आंखों से पाक आंसू बहा रहे थे। अपने उपकारी माता पिता का सभापति जी ने हृदय स्पर्शीय ब्यान किया। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी अपना ब्यान करके इस सभा को और ज़ोरदार बना दिया। कई जनों ने भाव प्रकाश किए जो सब इस प्रकार हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह मल्लेका : मैं बहुत समय पहले समाज में नहीं आ सका। इसका बहुत घाटा महसूस होता है। इस संगत के साथ जुड़कर हमारा बहुत भला हुआ है। हमारे परिवार में बहुत सुधार हुआ है व आगे से हो रहा है। मेरे बच्चे सुबह सत्यदेव की जय बुलाते हैं। बड़ों का सम्मान आदर करते हैं। मैं दूसरे जनों को इस संगत का पता देता हूँ व सभा में ले कर जाता हूं। समाज के कर्मचारियों की कृपा महसूस होती है जो हमारे लिए इतना कष्ट करके यहां पहुंच कर संग्राम करते हैं।

श्रीमान हरदेव सिंह जी :- यहां पर मेरे बहनोई श्रीमान राम चन्द्र जी व उनकी पत्नी मेरी बहन जी बैठे हैं। आप मेरी हर मुश्किल व कठिनाई में मेरा साथ देते हैं। इनका मुझे बड़ा सहारा है। आप मेरा हमेशा भला चाहते व करते हैं। इनके मेरे पर बहुत उपकार है। मैं इनका बहुत ही धन्यवादी हूं। इनका उपकार बहुत ही महसूस हो रहा है। श्रीमती .....जी (धर्मपत्नि श्रीमान रामचन्द्र जी) हमारा इस संगत से जुड़कर बहुत भला हुआ है। भाई जीत सिंह जी व उनके साथी मिल कर मेरे भाई हरदेव सिंह जी का बहुत ख्याल रखते हैं। हमारे सम्बंध बहुत बिगड़े हुए है। कुछ सम्बंधी तो मरने मारने को तैयार थे परन्तु आपस में मिलने के लिए तैयार नहीं थे। हम सभी सम्बंधी फिर इकट्ठे हो गए हैं। बड़ा ही मेल व सुधार आया है। हम सभी बहनें फिर इकट्ठी हो गई हैं व मिलने जुलने लग गई हैं। मेरे चाचा जी के साथ भी बहुत मेल हो गया है। यह सब गुरु जी की संगत की कृपा है।

जसविंदर सिंह शेरवों :– श्रीमान जी मेरा हाल तो पहले वाला ही है। इन सभाओं में रहा कि इस बार भी सभी सभाएं न सुन सका। परन्तु रात की अन्तिम सभा में आप की मेहनत व गुरू की कृपा

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

द्वारा मेरे अंदर कुछ हलचल जरूर पैदा हुई है। आप ने कहा कि दूसरों की जरूरत हमारी जरूरत से बढ़कर समझें।

श्रीमान जी दूसरों के लिए तो सवाल फिर उठेगा। अभी तक तो हमारे पास गुरू की संगत के लिए खाली समय, घंटे दो घंटे भी नहीं निकल रहे। श्रीमान जी सभाएं सुनकर उस पर अमल न करना इससे बड़ी बदनसीबी और क्या हो सकती है। श्रीमान जी! वायदा तो नहीं करता परन्तु अपनी तरफ से कोशिश जरूर करूंगा कि आगे से कोई सभा न छूटे।

श्रीमान जी! आपकी अच्छी सेहत की कामना करते हैं। श्रीमान जी! हमारा भला आपके साथ ही जुड़ा हुआ है। जिस कारण सत्संग की गंगा मल्लेका में बहती है, नहीं तो यहां पर किसने आना था। हमें आपको जो सम्मान देना चाहिए था, वह भी नहीं दे सकते इस के लिए हमें माफ करना।

दोपहर को 2 बजे एक सभा केसुपुरा में रखी गई। इसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। इसमें 60-65 जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि मानस जन्म दुर्लभ है। इस को ऐसे ढालना चाहिए कि जिस से अपना भी हित हो व औरों का भी हित हो व दूसरों के लिए सेवाकारी हो सकें। इसमें आदर्श पुत्र, आदर्श पुत्री, आदर्श भाई बहन, आदर्श पति-पत्नि, आदर्श सास बहु आदि के सम्बंधों के सच्चे दृष्टांत पेश किए गए जो दिलों को हिलाने वाले थे। बहुत ही सुन्दर वातावरण बना। कई जन तो आंसू बहा रहे थे। भगवान देवात्मा जो उपरोक्त कारज कर रहे हैं हाजरीन उन के आगे झुक रहे थे। सभी के दिल हिले हुए थे। सभी ही धन्यवाद के साथ भर रहे थे। सभी को इस निराली संगत की महानता महसूस हो रही थी। व गुरू जी के आगे झुकने को मजबूर हो रहे थे।

इस सत्संग की आखरी सभा रात की 8.00 बजे की गई। इसमें 60-65 जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि अगर मनुष्य यह बात हृदय में उतार कर उस पर अमल कर ले तो काफी मात्रा में धर्म आ जाता है। "Thy need is greater than mine" आपकी जरूरत मेरी जरूरत से बढ़कर है। इस पर अमल करने वाले व्यक्तियों के दृष्टांत दिए गए। फिर बताया कि मनुष्य नम्रता को ज्यादा से ज्यादा अपनाता जाए। इन दोनों बातों पर अमल करने से 75-70 प्रतिशत धर्म आ जाता है। आखिर में सुन्दर लाल जी व राम चन्द्र जी ने अपने बच्चों की शादी की खुशी के लिए लडडू बांटे। 900 रूपये दान में प्राप्त हुआ। 500 रूपये दान वर्मा जी ने दिया। कुल 8 अखबार इस दौरे पर नए जारी किए गए। गुरु महाराज जी की जय ध्वनि के साथ यह प्रभावशाली संगत समाप्त हुई।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts